ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 239-241

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

सामाजिक संरचना के निर्माण में समाज सुधारकों का योगदान

डॉ0 छविनाथ प्रसाद

असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, रामबचन सिंह राजकीय महिला महाविद्यालय, बगली पिजड़ा–मऊ (उ0प्र0) भारत

Received-13.06.2023, Revised-19.06.2023, Accepted-23.06.2023 E-mail: chhavi1976@gmal.com

सारांशः ***भारतीय समाज की संरचना अखिल सामाजिक परिदृश्य का एक अनोखा पुंज है। विश्व के विभिन्न समाजों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश समाज वर्गों पर आधारित हैं और उनमें किसी न किसी रूप में वर्ग जैसी विशेषताएं पाया जाता है, वहीं भारतीय परिवेश का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं यहां कि सामाजिक संरचना वर्ण पर आधारित है और इस वर्ण संरचना में व्यक्ति के अधिकार एवं कर्तव्य जन्म से जुड़ा है। हालांकि कुछ धर्म ग्रंथों में वर्ण परिवर्तन के महत्व को स्वीकार किया गया है लेकिन व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो इस प्रकार के वर्ण परिवर्तन बहुत कम हुए हैं। कुछ धर्म ग्रंथों में वर्ण परिवर्तन के महत्व को स्वीकार किया गया है लेकिन यह मात्र दिखावा सा लगता है। धर्म ग्रंथों के मूल में भी वसुधैव कुटुंबकम के महत्व को स्वीकार किया गया है फिर भी वास्तव में भारतीय सामाजिक संरचना में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं पड़ता है। कुछ शब्द कर्णप्रिय होता है। विश्व पटल पर धर्म ग्रंथों में उल्लिखित शब्द मन एवं आत्मा में विशेष गहरा छाप छोड़ जाता है लेकिन वास्तव में भारतीय सामाजिक संरचना का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि भारतीय समाज वर्णों पर ही आधारित नहीं है अपितु उससे दो कदम और आगे वर्तमान में जाति पर आधारित है। यह जाति व्यवस्था जन्म से सम्बन्धित है जो अपरिवर्तनीय है और इस जाति व्यवस्था में अनेक सामाजिक, आर्थिक, निर्योग्ताएँ विद्यमान हैं। शूद्र वर्ण में सम्मिलित अनेक जाति शोषण, मानवीय मूल्यों का उल्लंघन, धार्मिक तिरस्कार, उपेक्षापूर्ण व्यवहार, व्यावसायिक प्रतिबंध, भेद भाव, घृणित कार्य आदि समस्याओं एवं कठिनाईयों का शिकार होते हैं। जाति भारतीय सामाजिक संरचना में कोढ़ है। वर्तमान समय में सैकड़ों जातियों में विभक्त ये जातियां दीमक की तरह भारतीय समाज की संरचना को खोखला करते जा रहा है।***

कुंजीभूत शब्द– अवलोकन, सामाजिक संरचना, कर्तव्य, कर्णप्रिय, धर्म ग्रंथों, जाति व्यवस्था, अपरिवर्तनीय, सामाजिक, आर्थिक, निर्योग्ताएँ,

भारत की जनसंख्या पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि जाति पर आधारित सामाजिक संरचना में आधे से भी अधिक जनसंख्या उन जातियों से संबंधित है जिन्हें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि क्षेत्र में उच्च जातियों के द्वारा शोषण एवं भेद भाव का शिकार होना पड़ता है। भारतीय समाज की जाति व्यवस्था को धर्म ग्रंथों में अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि चतुर्वर्ण व्यवस्था में कुछ वर्णों को विषेश अधिकार प्राप्त था। चतुर्वर्ण व्यवस्था जो कालांतर में जाति में परिवर्तित हो गया वही स्वरूप वर्तमान समय में स्पश्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इस जाति संरचना में शूद्र की स्थिति अत्यंत दयनीय था जिसका धर्म ग्रंथों में बताये गये ध ार्मिक कर्तव्यों के महत्व को स्वीकार कर उनका मानवीय शोषण होता रहा है तथा उनके साथ पाशुवत व्यवहार भी होता रहा है। परिणामस्वरूप सामाजिक प्रगति की मुख्यधारा से यह जातियां काफी पिछड़ गई है। कर्णप्रिय वाक्य वसुधैव कुटुंबकम से भारतीय सामाजिक संरचना तनिक भी मेल नहीं खाता है। भारतीय सामाजिक संरचना के इस खोखले स्वरूप में सुधार करने के लिए अनेक समाज सुधारकों ने समय–समय पर व्यापक प्रचार–प्रसार एवं विरोध किया तथा धर्म ग्रंथों पर आधारित सामाजिक संरचना का खंडन किया और समाज सुधार के द्वारा एक नए भारतीय सामाजिक संरचना के निर्माण के लिए आजीवन संघर्ष एवं प्रयास किया।

धर्म ग्रंथों पर आधारित भारतीय सामाजिक संरचना जो वर्ण व्यवस्था का पोषक रहा है। इस वर्ण व्यवस्था की संरचना में सबसे निम्न स्थिति शूद्र की थी तथा वर्तमान में ये वर्ण सैकड़ों जातियों में विभक्त है, जिन्हें हजारों वर्षों से परंपरा के जंजीरों में पीस जा रहा है, उन्हें अंधकार से प्रकाश में लाने के लिए विभिन्न समाज सुधारकों ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया ताकि उन्हें सामाजिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके तथा उन्हें इस चतुर्वर्ण व्यवस्था जो धर्म के द्वारा शोषण पर आधारित था उससे मुक्ति मिले तथा एक बेहतर सामाजिक संरचना का निर्माण किया जा सके। कालांतर में शूद्र के उत्थान के लिए विभिन्न समाज सुधारकों के द्वारा किए गए प्रयास का उल्लेख करना न्याय संगत होगा।

चर्तुवर्ण व्यवस्था जो वतर्ममान समय में सैकड़ों जातियों में परिवर्तित है। जन्म पर आधारित जाति प्रथा का विरोध सर्वप्रथम छठी शताब्दी ईसा पूर्व में महात्मा बुद्ध के द्वारा किया गया था। महात्मा बुद्ध ने यज्ञवाद, वेदवाद, बहु देववाद, रूढ़िवाद, आडंबर युक्त कर्मकांड का व्यापक विरोध किया तथा साथ ही वेदों की प्रमाणिकता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया। महात्मा बुद्ध ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे वह जन्म के आधार पर किसी को भी छोटा या बड़ा नहीं मानते थे तथा कर्म के आधार पर व्यक्ति के मूल्यांकन के समर्थक थे। सिद्ध एवं नाथ योगी भी जाति–पाँति के विरोधी थे तथा वेदों को नहीं मानते थे। सिद्ध सहपाद कहते थे कि

ब्राह्मण जानते भेद, यो ही पढ़े चारों वेद ।
मट्टी पानी कुशलेयी, पठंत धरहीं बैठी धरहिं होमंत।।

नाथ योगियों ने भी वेद शास्त्र को नहीं माना तथा जाति–पाँति का तिरस्कार किया। ज्ञान तिलक में गोरखनाथ कहते थे–

हॉड़ो वेद व्योपार। पढ़वा! गुडिबा लोकाचार।
वेद न शास्त्रे केवल न पुराणे पुस्तकें न बच्चा जाई।।

वर्ण पर आधारित जातिवादी सामाजिक संरचना का खंडन 15 वीं एवं 16 वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के द्वारा भी किया गया था। भक्ति आंदोलन का स्वरूप सरल एवं पवित्र था, इनमें जाति–पाँति का कोई स्थान नहीं था। रामानुजाचार्य, निंबार्क, माधवाचार्य,

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

रामानंद, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, नाम देव, रविदास, कबीर, नानक, सूरदास, नरसी मेहता एवं भक्त शिरोमणि मीराबाई भक्ति आंदोलन एवं भक्ति मार्ग द्वारा जाति–पाँति का व्यापक विरोध किया।

19 वीं शताब्दी में शूद्र के उत्थान के लिए सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन का प्रमुख योगदान रहा है। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज के द्वारा जाति प्रथा एवं अस्पृश्यता पर जोरदार प्रहार किया गया। ब्रह्म समाज हिंदू धर्म का पहला सुधारवादी आंदोलन था। ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राममोहन राय पर आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा का गहरा प्रभाव था इनका सबसे लोकप्रिय संदेश था। "मनुष्य की सेवा ही भगवान की सबसे बड़ी सेवा है।" इन्होंने झूठ के अंधविश्वासों को हिंदू धर्म से दूर करने का प्रयास किया साथ ही अनेक सामाजिक कुरीतियों एवं जातिवाद का पुरजोर विरोध किया। दूसरा सामाजिक एवं धार्मिक सुधार के क्षेत्र में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती का महत्वपूर्ण योगदान था। इस संगठन ने भी शूद्र के उत्थान करने में विशेष रुचि दिखाई तथा शुद्धि आंदोलन चलाया जिसका उद्देश्य था शूद्र को सामान्य श्रेणी में लाना। इन्होंने शूद्र एवं स्त्रियों को वेद पढ़ने, ऊंची शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपवित धारण करने तथा उच्च जातियों के समान अधिकार दिलाने के लिए आंदोलन किया तीसरा शूद्र के उत्थान के लिए आत्माराम पांडुरंग, न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे एवं आर०जी० भंडारकर के द्वारा प्रार्थना समाज की स्थापना की गई। शूद्र की प्रस्थिति में बदलाव लाने के लिए प्रार्थना समाज के द्वारा रात्रि कालीन स्कूल खोला गया जिससे इनमें शिक्षा का प्रसार किया जा सके।

1875 ईस्वी में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की गई। इस सोसाइटी के द्वारा भी शूद्र में सामाजिक एवं शैक्षणिक प्रगति लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वामी विवेकानंद के द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना किया गया तथा उन्होंने शूद्र में शिक्षा, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में बदलाव लाने के लिए व्यापक आंदोलन चलाया। स्वामी विवेकानंद ने कहा "यदि ब्राह्मणों में वंशानुगत आधार पर सीखने की अधिक क्षमता है तो ब्राह्मणों पर शिक्षा के लिए पैसा खर्च करने की आवश्यकता नहीं है और सभी पैसा दलितों के शिक्षा पर खर्च हो सभी दान कमजोर वर्ग के लोगों को दिया जाए।" स्वामी विवेकानंद को पता था कि दलितों के लिए केवल निःशुल्क विद्यालय खोल देने से ही उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता है उन्होंने कहा कि यदि गरीब शिक्षा प्राप्त करने के लिए नहीं आते तो शिक्षा को ही उन गरीबों तक ले जाना चाहिए।

पश्चिमी भारत में ज्योतिबा फूले ने शूद्र के उत्थान के लिए काफी संघर्ष किया है इन्होंने 1873 ईस्वी में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। जिसका उद्देश्य था समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को सामाजिक न्याय दिलाना। दलित समाज में चेतना उत्पन्न करने के कारण उन्हें महात्मा कहकर पुकारा जाने लगा। इन्होंने शूद्र समाज को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक दासता से मुक्त करने और स्वतंत्रता तथा समानता के आधार पर नए समाज के निर्माण की कल्पना की। यदि यह कहा जाए कि "आधुनिक भारत में धर्म, जन्म और लिंग पर आधारित भेदभाव को समाप्त कर जाति विहीन समाज की स्थापना के लिए संघर्ष किया तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा।" आधुनिक भारत के इतिहास में ज्योतिबा फूले ने सामाजिक क्रांति की धारा को प्रस्फुटित किया।

20वीं सदी में पश्चिमी भारत तथा दक्षिणी भारत में शूद्र उत्थान के लिए अनेक संगठन अस्तित्व में आए। श्री पी० त्यागराज और पी०एम० नायर ने गैर ब्राह्मणवादी संगठन "दक्षिण भारतीय उदारवादी संघ" की स्थापना 1917 में की। यह संगठन बाद में जस्टिस पार्टी के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा रामास्वामी नायर को इस पार्टी का अध्यक्ष चुना गया। नायर सामाजिक न्याय एवं समानता के पक्षधर थे उन्होंने अस्पृश्यता का विरोध किया। नायर हिंदू धर्म के द्वारा पोषित ब्राह्मणवाद का जमकर निंदा एवं आलोचना की तथा मनुस्मृति के सिद्धांतों को भेद भावपूर्ण बताया।

श्री नारायण गुरु ने केरल में नारायण धर्म परिपालन योगम की स्थापना की। नारायण गुरु जाति के अछूत थे उन्होंने केरल में अनेक मंदिरों की स्थापना की तथा सभी जातियों के लिए बिना भेदभाव के मंदिर के द्वारा खोलें। नारायण गुरु का विचार था कि जातियों का भेदभाव सतही है। "वे एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर में विश्वास करते थे।"

छत्रपति शाहूजी महाराज का मानना था कि शिक्षा सभी प्रगति एवं समृद्धि की कुंजी है, उन्होंने दलितों में शिक्षा के प्रसार के लिए निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की तथा साथ ही 28 मई, 1913 ई० को प्रत्येक गांव में प्राथमिक विद्यालय खोलने के लिए राजाज्ञा जारी किया। शाहू जी महाराज ज्योतिबा फूले से काफी प्रभावित थे उन्हीं की प्रेरणा से प्रेरित होकर सत्यशोधक स्कूल की स्थापना की तथा मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की। परिणामस्वरूप एक महान समाज सुधारक डॉ० भीमराव अंबेडकर को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। शूद्र के उत्थान के लिए संत गाडगे, स्वामी अछूतानन्द हरिहर आदि समाज सुधारकों ने भी सामाजिक संरचना के निर्माण में महत्वपूर्ण कार्य एवं योगदान दिए।

महात्मा गांधी अस्पृश्यता को हिंदू धर्म का कलंक मानते थे तथा इन्होंने शूद्र को सम्मान देने के लिए हरिजन कहना आरंभ किया। 30 सितंबर 1932 को शूद्र के कल्याण के लिए हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। जिसका उद्देश्य अस्पृश्यता का विरोध एवं सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक शोषण से उत्थान करना था। महात्मा गांधी के चिंतन में मानवतावाद था, उनका मानना था कि यदि आत्मा एक है, ईश्वर एक है, अछूत कोई नहीं। इसलिए महात्मा गांधी ने सर्वोदय समाज की कल्पना की है।

शूद्र के उत्थान में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का प्रमुख योगदान एवं स्थान है। उनके जीवन पर सत्यशोधक समाज की स्थापना करने वाले ज्योतिबा फूले का गहरा प्रभाव था। ज्योतिबा फूले डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के प्रेरणा स्रोत, प्रेरक एवं गुरु थे। डॉ0 अम्बेडकर भारतीय सामाजिक संरचना में शूद्र के शोषण एवं उत्पीड़न का प्रमुख कारण शिक्षा को मानते थे इसलिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्तिक एवं नैतिक आदि उत्थान एवं अस्मिता के लिए तथा इनमें जागृति एवं अधिकार दिलाने के लिए, आवाज उठाने की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

प्रेरणा दी। शिक्षित बनो! संगठित हो!! संघर्ष करो!!! यह संदेश देकर शिक्षा के महत्व को समझाया तथा शूद्र में पढ़ने की प्रेरक चिंगारी को जगाया। शूद्र में जगाए गये यह चिंगारी आज उनके जीवन को परिवर्तित कर रहा है।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने शूद्र के उत्थान के लिए अपना सर्वस्व जीवन समर्पित कर दिया। डॉ० भीमराव अंबेडकर का शूद्र में अधिकार एवं शिक्षा प्रसार के लिए बहिष्त हितकारिणी सभा पहला संगठित प्रयास था। इन्होंने भारतीय महार सैनिकों के सम्मान में कोरेगांव में शूद्र के स्वाभिमान के प्रतीक के लिए शिलालेख खुदवाए, छुआछूत के विरुद्ध व्यापक आंदोलन आरंभ किया तथा मनुस्मृति की सार्वजनिक रूप से निंदा की। शूद्र को मंदिरों में प्रवेश के लिए 1930 में काला राम मंदिर सत्याग्रह प्रारंभ किया साथ ही महात्मा गांधी के द्वारा दिया गया हरिजन शब्द की आलोचना एवं निंदा की। भारतीय संविधान में शूद्र के उत्थान के लिए अनेक उपबंध किए। हालांकि भारतीय सामाजिक संरचना को परिवर्तित करने में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर पर यह आरोप लगाया जाता है कि केवल शूद्र के उत्थान के लिए कार्य किया इसीलिए वे शूद्र समाज के मसीहा एवं पूजनीय है जबकि यह बिल्कुल गलत है, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने केवल शूद्र उत्थान के लिए कार्य नहीं किया अपितु समाज के कमजोर वर्गों, महिलाओं, श्रमिकों, सरकारी सेवकों, जनजातियों, पिछड़ों आदि के उत्थान में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, राज भूषण, बिहार में दलित चेतना का विकास, जानकी प्रकाशन, पटना– 2004.
2. भारतीय, ओमप्रकाश, कमजोर वर्गों का समाजशास्त्र, विजय प्रकाशन मंदिर, 2011.
3. कुमार, संजय, दलित साहित्य : एक विमर्श, कबीर! दलित! विमर्श के परिपेक्ष्य में, वसंत कन्या महाविद्यालय, वाराणसी– 2006.
4. भारतीय, रामविलास, बीसवीं सदी में दलित समाज, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिसटीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–2011.
5. गुप्ता, कुसुम, दलित आंदोलन एवं अंबेडकर (सामाजिक विमर्श), अंबेडकर अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी–2005.
6. राम, जगजीवन, भारत में जातिवाद एवं हरिजन समस्या, राजपाल एंड संस, दिल्ली–2001.

*****